ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

Symbol of oneness

DHYAN-KAKSH

SCHOOL OF EQUANIMITY & EVEN-SIGHTEDNESS

ब्रह्म

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल

(Guiding force)

सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

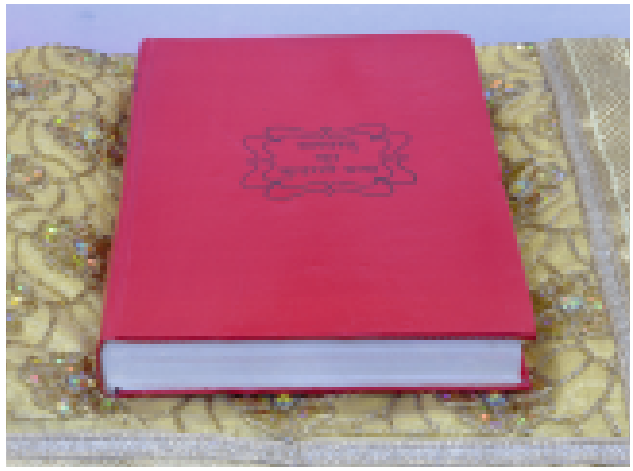

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-59-8

प्रथम संस्करण | जुलाई, 2024

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

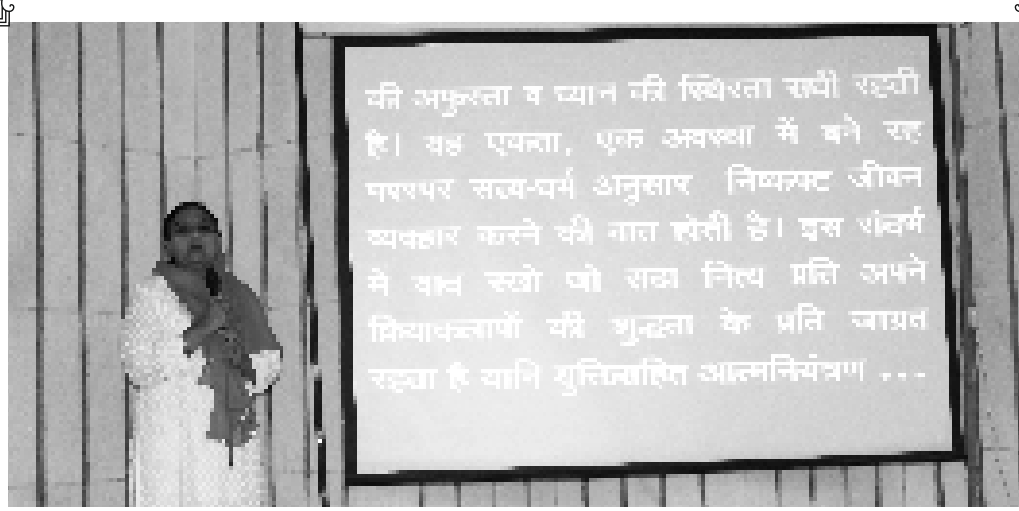

की प्रफुल्लता व ध्यान की स्थिरता बनी रहती
है। यह एकता, एक अवस्था में बने रह
परस्पर सत्य-धर्म अनुसार निष्कपट जीवन
व्यवहार करने की बात होती है। इस संदर्भ
में याद रखो यो सदा नित्य प्रति अपने
क्रियाकलापों की शुद्धता के प्रति जाग्रत
रहना है यानि युक्तियुक्त आत्मनियंत्रण ...

सच्चाई
धर्म
सम

ब्रह्म

सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

'सर्व सर्व वही ब्रह्म ही ब्रह्म है।
फिर ब्रह्म विशेष भी है निर्लेप भी है
और रूप रंग रेखा से बाहर है'।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2,
बुधवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न0 30)

आओ जानें कैसे?

इस संदर्भ में ज्ञात हो कि स्थूल आँखों से दिखाई देने वाले इस नश्वर जगत अर्थात् सृष्टि के तमाम पदार्थों की अनेकता सत्य नहीं है क्योंकि जो कुछ भी दिख रहा है उसकी हकीकत में कोई वास्तविक सत्ता नहीं है, केवल भ्रांति अथवा भ्रम मात्र है। वस्तुतः रूप, रंग, रेखा रहित ब्रह्म ही अप्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रूप से इस जगत का अभिन्न निमित्त व उपादान कारण है यानि वह ही अपनी प्राकृतिक ब्रह्म शक्ति से इस नाना प्रकार की मायावी चराचर सृष्टि को रचता है व वह आप ही कार्य में परिणत यानि रूपान्तरित हो जाता है। यहाँ निमित्त व

उपादान कारण का अर्थ स्पष्ट करते हुए बता दें कि निमित्त कारण वह है जिसकी सहायता या कर्त्तापन से कोई वस्तु बनती है (means the one who made it) तथा उपादान कारण वह है जो अन्य रूप धारण करके किसी वस्तु को बनाता है (i.e. the one from whom it came)। जैसे घड़े का निमित्त कारण कुम्हार है तथा उपादान कारण मिट्टी है।

जगत - ब्रह्म का विवर्त यानि भ्रम रूप

इस बात को सजनों यदि ध्यान से समझें तो ज्ञात होता है कि यह जगत ब्रह्म का परिणाम (Result) या विकार (Disorder) नही है, अपितु विवर्त यानि भ्रम या रूपांतर (illusion/Falsity) है। इस संदर्भ में किसी वस्तु का कुछ और हो जाना विकार या परिणाम कहलाता है परन्तु उसका और कुछ प्रतीत होना विवर्त यानि भ्रम कहलाता है। जैसे दूध का दही हो जाना विकार है, रस्सी का सांप प्रतीत होना विवर्त/भ्रम है। यह जगत भी ब्रह्म का विवर्त है यानि मिथ्या या भ्रम रूप है। इस भ्रम के कारण ही हमें इस जगत में विभिन्नता, विविधता और

विचित्रता दिखाई पड़ती है। परन्तु वास्तव में तो एक ही ब्रह्म, अनेक रूपों में प्रवेश कर, समस्त जगत का अधिष्ठान (Foundation) यानि ब्रह्म स्वरूप कहलाता है। इसलिए तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया है:-

ब्रह्म स्वरूप प्रकाशित हूँ,
हर अन्दर ही मैं जापत हूँ

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, द्वितीय भाग, कीर्तन न0 35)

ब्रह्म - मूर्त भी और अमूर्त भी

यानि ब्रह्म विराट् भी है और सूक्ष्म भी। अव्यक्त भी है और व्यक्त भी। कारण (Cause) भी है और कार्य (action) भी। कर्त्ता भी है और अकर्त्ता भी। उस के मूर्त (Idol) और अमूर्त (Formless) दो रूप हैं जो अ-क्षर (Imperishable) और क्षर (Perishable) रूप से समस्त प्राणियों में स्थित हैं। इस संदर्भ में क्षर वह है जोकि नश्वर, मायाबद्ध व परिवर्तनशील है तथा अ-क्षर वह है जिसका कभी विनाश नहीं होता यानि जो सर्वदा विद्यमान, मायातीत, स्थिर व शाश्वत है।

उदाहरण तौर पर सब जीवों के शरीर क्षर हैं परन्तु जो क्षर में निवास करता है वह आत्मा/परमात्मा अविनाशी यानि अ-क्षर है। इस नाते अ-क्षर परब्रह्म-परमेश्वर है तथा क्षर ब्रह्म-शक्ति द्वारा रचित सम्पूर्ण जगत है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में परमेश्वर भी कहते हैं:-

रूप है एक नाम अनेक,
सब वस्तु विच जगदा मैं हूँ
बिन सूरजों प्रकाश है मेरा,
सब विच देखो सजदा मैं हूँ
पारब्रह्म परमेश्वर मैं हूँ,
पारब्रह्म परमेश्वर मैं हूँ
ओ मैं हूँ, ओ मैं हूँ, ओ मैं हूँ, ओ मैं हूँ

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, द्वितीय सोपान, कीर्तन न0 86)

कुदरत - परमेश्वर की मूल शक्ति

यहाँ ज्ञात हो कि परमेश्वर की मूल शक्ति जिसे प्रकृति या कुदरत कहते हैं वह ही इस अनेक रूपात्मक जगत का विकास करती है तथा उसी का रूप दृश्यों में दृष्टिगोचर होता है। अन्य शब्दों

OPEN HOUSE
DISCUSSION

में कुदरत ही विश्व की रचना या सृष्टि करने वाली मूल नियामक तथा संचालक शक्ति (Regulating and Executive Power) कहलाती है। तभी तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

कुदरत दे वाली ने कुदरत उपजाई,
कुदरत ओ कुदरत, कुदरती आई।

कुदरत ओ सारी हरियाली,
ओ है कुदरत दा वाली,
ओ है कुदरत दा वाली।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग 4, कीर्तन न0 25)

ब्रह्म सर्गुण भी व निर्गुण भी

अब तो सबको समझ आ गया होगा कि ब्रह्म सर्गुण भी है व निर्गुण भी। सर्गुण यानि सत्व, रज और तम इन तीनों प्राकृतिक गुणों से युक्त (Attributes) व निर्गुण (Attributeless) यानि प्रकृति के इन तीनों गुणों से परे। इस संदर्भ में जहाँ सर्गुण ब्रह्म को साकार ब्रह्म यानि जगत के कर्त्ता तथा परिचालक परमेश्वर के नाम से जाना जाता है, वहीं जगत से

निर्लिप्त निर्गुण ब्रह्म को निरूपाधि, निराकार परब्रह्म परमात्मा कहा जाता है। सरल शब्दों में ब्रह्म ही ईश्वर यानि क्लेश (दुःख), कर्म (भाग्य), विपाक (कर्मफल/परिणाम रहित) तथा आश्य (उद्देश्य) से पृथक **(Distinct)** सत्ता है तथा ब्रह्म ही सर्व जीव रूप है और ब्रह्म ही सकल प्रजा का पति यानि रक्षक व स्वामी है। तभी तो कहा गया है:-

'ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है व इस चैतन्य स्वरूप के अतिरिक्त और जो कुछ प्रतीत होता है वह सब असत्य और मिथ्या है यानि उसकी पारमार्थिक (यथार्थ) सत्ता नहीं है'।
यह ही असलियत स्वरूप का यथार्थ ज्ञान है।
इसके अतिरिक्त द्वैत या नानात्व (Diverse) ज्ञान अज्ञान है, भ्रम है।

अज्ञान/अविद्या - आत्मविस्मृति का मुख्य कारण

इस संदर्भ में जब शरीरबद्ध जीव इस अज्ञान या अविद्या के कारण अपने इस शुद्ध ज्ञानमय ब्रह्मस्वरूप को भूल कर व मन, बुद्धि, अहंकार,

इन्द्रियों और शरीर आदि की उपाधि को अपना वास्तविक स्वरूप समझ कर, उनकी अवस्थाओं को अपनी अवस्था मान बैठता है और कर्त्तापन के अभिमान से ग्रसित हो, सकाम कर्म करता है तो वह पुण्य और पाप का संचय करता हुआ, उन कर्मों का भोक्ता बन बैठता है और इसी कारण जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँस आवागमन की त्रास भुगतता है। जैसा कि कहा भी गया है:-

असली स्वरूप नू भुलिया,
मन कई जूनां विच भटकावे
बुद्धि होई ए करूर तेरी
कई वेरी जम्मे ते मरदा राहवे।

कर्मां दे अनुसार जीव,
चौरासी भुगत भुगत के आवे।
भुलियां रैन विहाणी, भुलियं रैन विहाणी।।
सुन लौ कलुकाल दी कहानी,
सुन लौ कलुकाल दी कहानी।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, द्वितीय सोपान, कीर्तन न0 80)

आत्मस्मृति

सजनों जीव को इस भयावह दुःखद स्थिति से उबारने हेतु ही कलुकाल के अंतिम चरण में आती है समभाव-समदृष्टि की युक्ति। इस सर्वमहान युक्ति के वर्त-वर्ताव द्वारा, आत्मज्ञान प्राप्त कर लेने पर जीव/ब्रह्म की एकता का सहज ही सुबोध हो जाता है और अविद्या/अज्ञान का नाश हो जाता है यानि शरीर, इन्द्रियों, मन, अहंकार और बुद्धि से अपनेपन का भाव हट जाता है और कर्त्ता-भोक्ता का अभिमान नष्ट हो जाता है। इस तरह जीव कर्म तथा उनके फलों से मुक्ति पाकर और अल्पज्ञता की संकीर्ण सीमा तोड़ कर अपने अनंत शुद्ध ज्ञानमय ब्रह्म स्वरूप में अवस्थित हो जाता है और कह उठता है:-

हुण सजनों तुसां ढूँढो कित्थे,
अपना आप है ब्रह्म स्वरूप
ओही ब्रह्म स्वरूप सारी नगरी दिस्से

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2, कीर्तन न0 14)

सबका आत्मस्वरूप ब्रह्म

इससे सजनों स्पष्ट होता है कि जगत् कारण, सर्वनियन्ता, सर्वव्यापी, सबका आत्मस्वरूप, रूप, रंग, रेखा रहित ब्रह्म ही है। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों कहा गया है:-

इन दस इन्द्रियों के दरमियान में जिसकी रौशनी है, जो हर जगह मौजूद है वही सच्चिदानन्द भगवान आप ही हो।

(सतवस्तु के कुदरती ग्रथ का पहला अध्याय)

यानि आप वह वस्तु हैं जिसे हथियार काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, पवन उड़ा नहीं सकती, पानी बहा या गला नहीं सकता आप अजर अमर हैं। यह आत्मा तो इस तरह शरीर रूपी चोले को बदलती रहती है, जैसे पुराना वस्त्र उतार कर नया पहन लिया जाता है शरीर ही केवल नाशवान है, लेकिन वह असलियत सदा अजर अमर है। उदाहरण रूप में समझें तो शरीर एक घड़े की तरह है, लेकिन वह असलियत सूरज की तरह है। यह शरीर रूपी घड़ा तो टूट जाता है, परन्तु वह सूरज सदा अटल है। आप भी सदा अटल रहने वाले

सूरज हैं व वह शक्ति हैं जिस के लिये ख़ुशी-ग़मी एक समान है। जैसा कि कहा भी गया है:-

अमर है मेरी आत्मा
न जन्म में है
न मरन में है
न रोग में है
न सोग में है
न खुशी में है
न ग़मी में है
न मान में है
न अपमान में है
न अमीरी में है
न गरीबी में है
वह अमीरों का भी अमीर है।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-2, बुधवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न0 30)

इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों आप भी सब हालतों में हृदय, दिमाग और शरीर को ठीक रखो तथा अपने स्वरूप और आत्मा को इन चीज़ों से निर्लेप अर्थात अलग समझो, क्योंकि आप का वही स्वरूप और आत्मा सदा अजर अमर है।

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निमलिखित लिंक
(QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं ।

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695

Email: contact@dhyankaksh.org

Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2